

पूंजी

मानव निर्मित सामग्री में पूंजी। मनुष्य अन्य वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में उसकी मदद के लिए पूंजीगत उपकरणों या वस्तुओं का उत्पादन करता है। इसलिए पूंजी को "आगे उत्पादन के उत्पादित साधन" के रूप में परिभाषित किया गया है। 'पूंजी' शब्द का उपयोग अक्सर धन, धन और भूमि जैसी अवधारणाओं के लिए किया जाता है।

पूंजी के प्रकार:

1. फिक्स्ड कैपिटल और वर्किंग कैपिटल:

(क) फिक्स्ड कैपिटल-

उत्पादन प्रक्रिया में इसका कई बार उपयोग किया जा सकता है। निश्चित पूंजी का स्तर बहुत कम अवधि में उत्पादन के स्तर के साथ भिन्न नहीं होता है।

उदाहरण के लिए- कृषि भवन, ट्रैक्टर, कृषि उपकरण आदि।

(ख) वर्किंग कैपिटल वेरिएबल कैपिटल या परिसंचारी पूंजी:

इसका उपयोग केवल एक बार किया जा सकता है और वे आगे के उपयोग के लिए उपलब्ध नहीं हैं।

उदाहरण के लिए- उर्वरक का उपयोग धान आदि का उत्पादन करने के लिए किया जाता है।

2. ड्रब राजधानी और फ्लोटिंग कैपिटल:

(क) ड्रब पूंजी केवल एक विशिष्ट उद्देश्य के लिए होती है। उदाहरण के लिए - गन्ना कोल्हू, धान थ्रेसर आदि।

(ख) फ्लोटिंग कैपिटल- किसी भी उपयोग के लिए नियोजित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए - पैसा

3. सामाजिक पूंजी और निजी पूंजी:

(क) सामाजिक पूंजी-सामाजिक पूंजी पूरे समाज के स्वामित्व में है और इन परिसंपत्तियों से प्राप्त लाभ समाज के सदस्यों के बीच साझा किए जाते हैं। उदाहरण के लिए- पुल, बांध, सरकारी स्वामित्व वाली फैक्ट्रियां आदि।

(ख) निजी पूंजी-निजी पूंजी व्यक्तियों के स्वामित्व में है और इन परिसंपत्तियों से प्राप्त आय या लाभ केवल उन व्यक्तियों के लिए उपलब्ध हैं जो उनके मालिक हैं। उदाहरण के लिए- ट्रैक्टर, निजी कारखाने

राष्ट्रीय आय से संबंधित बुनियादी शर्तें

1) सकल घरेलू उत्पाद [जीडीपी]:

सकल घरेलू उत्पाद वर्तमान में एक वर्ष में देश के घरेलू क्षेत्र के भीतर उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का कुल बाजार मूल्य है।

(2) सकल राष्ट्रीय उत्पाद [जीएनपी]:

- जीएनपी वर्ष में उत्पादित सभी अंतिम अच्छे और सेवाओं का कुल बाजार मूल्य है।



- जीएनपी में विदेशों से शुद्ध कारक आय शामिल है जहां सकल घरेलू उत्पाद के रूप में नहीं है। इसलिए,

$$\text{जीएनपी} = \text{जीडीपी} + \text{नेट फैक्टर आय विदेश में}$$

नेट फैक्टर आय = विदेशों से भारतीय नागरिकों को प्राप्त कारक आय - भारत में काम कर रहे विदेशी नागरिकों को भुगतान की जाने वाली कारक आय।

(3) **नेट नेशन प्रोडक्ट [एनएनपीआई]:**

यह मूल्यहास प्रदान करने के बाद सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का बाजार मूल्य है।

$$\text{एनएनपी} = \text{जीएनपी} - \text{मूल्यहास}$$

(4) **सकल निजी घरेलू निवेश:**

- यह नए संयंत्र और उपकरणों के लिए खर्च के साथ-साथ इन्वेंटरी में बदलाव के बराबर है।

(5) **शुद्ध निजी घरेलू निवेश:**

- यह सकल निजी घरेलू निवेश कम अवमूल्यन के बराबर है।

(6) **व्यक्तिगत आय**

- यह वास्तव में एक विशेष वर्ष के दौरान सभी संसाधनों से व्यक्तियों द्वारा प्राप्त धन आय की कुल राशि है।

(7) **डिस्पोजेबल आय:**

- यह व्यक्तिगत आय शून्य से आयकर है।

(8) **प्रति पूंजीगत आय:**

- देश की जनसंख्या से विभाजित राष्ट्रीय आय।

(9) **कुल मांग:**

- यह उपभोक्ता वस्तुओं और सेवाओं, सरकारी वस्तुओं और सेवाओं, (वांछित) निवेश और शुद्ध निर्यात पर कुल व्यय है।

(10) **कुल आपूर्ति:**

- कुल आपूर्ति किसी देश में उत्पादित समग्र उत्पादन या वास्तविक राष्ट्रीय उत्पाद को संदर्भित करती है।

➤ **उत्पादन के कारक:**

1. भूमि
2. श्रम
3. पूंजी
4. उद्यमकर्ता



➤ जीएसटी [गुड्स एंड सर्विस टैक्स]:

- जीएसटी भारत में अप्रत्यक्ष कराधान की एक प्रस्तावित प्रणाली है जो अधिकांश मौजूदा करों को कराधान की एकल प्रणाली में विलय कर रही है।

➤ मुद्रास्फीति:

- मुद्रास्फीति एक बिंदु-से-बिंदु आधार पर वस्तुओं की एक टोकरी की कीमत में वृद्धि को इंगित करती है।

मुद्रास्फीति का वर्गीकरण:

A. रेंगती हुई महंगाई:

जब कीमतों में वृद्धि बहुत धीमी है (प्रति वर्ष 3% से कम)

B. पैदल चलना या ट्रॉटिंग मुद्रास्फीति:

जब कीमतें मामूली रूप से बढ़ती हैं और वार्षिक मुद्रास्फीति दर एक अंक (3% -10%) होती है।

C. रनिंग इन्फ्लेशन:

जब कीमतें 10%-20% प्रति वर्ष की गति से घड़े के चलने की तरह तेजी से बढ़ती हैं।

D. सरपट दौड़ना या हाइपरइन्फ्लेशन:

जब कीमतें 20% से 100% प्रति वर्ष या उससे भी अधिक के बीच बढ़ती हैं।

➤ मुद्रास्फीति के कारण कारक:

1. मांग में वृद्धि
2. धन की आपूर्ति में वृद्धि
3. डिस्पोजेबल आय में वृद्धि
4. सार्वजनिक व्यय में वृद्धि
5. उपभोक्ता खर्च में वृद्धि
6. सस्ती मौद्रिक नीति
7. घाटे का वित्तपोषण



8. निर्यात में वृद्धि

9. काले धन या बेहिसाब धन की व्यापकता और काउंटर के अस्तित्व को भी महसूस किया धन मुद्रास्फीति के लिए नेतृत्व किया

10. तेजी से आर्थिक विकास के लिए योजना

➤ मुद्रास्फीति पर नियंत्रण: निम्नलिखित मुद्रास्फीति विरोधी उपाय हैं:

(क) मौद्रिक उपाय

- 1) केंद्रीय बैंक यानी भारतीय रिजर्व बैंक बाजार में ब्याज दर बढ़ा सकता है जिससे कुल खर्च में कमी आएगी।
- 2) अगर आरबीआई बैंकिंग सिस्टम के लिए उपलब्ध कैश को कम कर सकता है तो बैंकों की कर्जदारों को पैसा उधार देने की क्षमता कम हो जाएगी।
- 3) आरबीआई सरकारी प्रतिभूतियों को बैंकों या जनता को बेच सकता है ताकि बैंक या जनता के पास उपलब्ध नकदी को कम किया जा सके।
- 4) कंज्यूमर क्रेडिट कंट्रोल से मनी सप्लाई कम हो सकती है।

(ख) राजकोषीय उपाय

- 1) सरकारी खर्च में कमी
- 2) नए करों का अधिरोपण
- 3) बचत का प्रोत्साहन या अनिवार्य बचत योजनाएं शुरू करना

(ग) भौतिक या गैर-मौद्रिक उपाय

- 1) उत्पादन बढ़ाना, आयात बढ़ाना और निर्यात घटना ताकि कम आपूर्ति वाले सामानों की उपलब्धता बढ़ाई जा सके।
- 2) लागत को कम रखने के लिए पैसे की मजदूरी को नियंत्रित करना।
- 3) मूल्य नियंत्रण और राशनिंग।

➤ व्यापार संगठन के रूप

एक व्यापार संगठन या तो एक ही व्यक्ति या कई लोगों द्वारा स्वामित्व में हो सकता है। एक व्यापार संगठन का प्राथमिक उद्देश्य या तो लाभ अर्जित करना या लोगों के सामान्य कल्याण को बढ़ावा देना हो सकता है। उपरोक्त दो मानदंडों के आधार पर, व्यापार संगठनों को पांच श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

a) व्यक्तिगत उद्यमी (व्यक्तिगत मालिकाना प्रणाली)

- एक ही व्यक्ति के स्वामित्व वाले एक व्यापार संगठन को व्यक्तिगत मालिकाना प्रणाली के रूप में जाना जाता है।

b) साझा व्यापार

- इस मामले में, दो या दो से अधिक व्यक्ति एक साथ जुड़ते हैं; सहमत अनुपात में शेयर पूंजी और शेयर लाभ या हानि का योगदान करें।
- यह व्यापक व्यक्तिगत संपर्क स्थापित करता है और इसलिए बड़े पैमाने पर उत्पादन संभव है।



c) संयुक्त - स्टॉक कंपनी

- संयुक्त स्टॉक कंपनी का स्वामित्व बड़ी संख्या में शेयर धारकों के पास है जो शेयर पूंजी में योगदान देते हैं।
- वे कंपनी के लाभ (लाभांश) प्राप्त करने के हकदार हैं।

d) सहकारी उद्यम

- सहयोग आर्थिक संगठन का एक रूप है जहां लोग स्वेच्छा से पारस्परिक लाभ के आधार पर एक व्यावसायिक उद्देश्य के लिए एक साथ काम करते हैं।
- यह एक स्वैच्छिक संगठन है जो अपने सदस्यों के आर्थिक हितों को बढ़ावा देने के लिए बनाया गया है।
- सदस्यों को समान अधिकार और जिम्मेदारियां होती हैं।

e) राज्य उद्यम

- सरकार के स्वामित्व वाला वाणिज्यिक उपक्रम सार्वजनिक उपक्रम या राज्य उद्यम है।
- निम्नलिखित कारणों से सार्वजनिक उपक्रम शुरू किए गए हैं:
 - i) इससे तेजी से आर्थिक विकास होता है।
 - ii) यह सुनिश्चित करता है कि विकास का लाभ सभी लोगों द्वारा साझा किया जाए।

LEARNIZY